अध्याय IV

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय IV

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना :–

अध्ययन हेतु चयनित उपकरण के माध्यम से चुने गये न्यादर्श द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। तत्पश्चात् प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या इस अध्याय में की गई। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं के स्वीकृति हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। जो नवीन सिद्धान्त की खोज अथवा सामान्यीकरण रूप से होता है। प्रदत्तों विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पात्तियों द्वारा किया जाता है।

प्रस्तुत अध्याय में उचित सांख्यिकी विधियों का उपयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया जाता है। इस शोध अध्ययन में कुल 6 परिकल्पनायें रखी गई है। जिसकी जाँच करने और उपरान्त त्वरित प्रदत्तों के प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई है।

पी.व्हीं युंग के शब्दों में संकलित तथ्यों के उचित संस्थिति संबंधो के रूप व्यवस्थित कर विचारपूर्ण आधाशिला की स्थापना करना ही विश्लेषण है। अर्थात् विश्लेषण शोध का सृजनात्मक पक्ष है।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.2.1 उद्देश्य

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।

तालिका 4.2.1

पर्यावरण जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांको का आवृत्ति वितरण

प्राप्तांक	आवृत्ति	प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
36	1	1.0	1.0
37	1	1.0	2.0
41	2	2.0	4.0
42	2	2.0	6.0
44	2	2.0	8.0
45	2	2.0	10.0
46	4	4.0	14.0
47	3	3.0	17.0
48	2	2.0	19.0
49	5	5.0	24.0
50	2	2.0	26.0
51	8	8.0	34.0
52	7	7.0	41.0
53	4	4.0	45.0
54	2	2.0	47.0
55	3	3.0	50.0

56	3	3.0	53.0
57	12	12.0	65.0
58	8	8.0	73.0
59	6	6.0	79.0
60	3	3.0	82.0
61	1	1.0	83.0
62	6	6.0	89.0
63	1	1.0	90.0
68	2	2.0	92.0
69	3	3.0	95.0
70	1	1.0	96.0
71	1	1.0	97.0
72	1	1.0	98.0
73	1	1.0	99.0
74	1	1.0	100.0
योग	100	100.0	

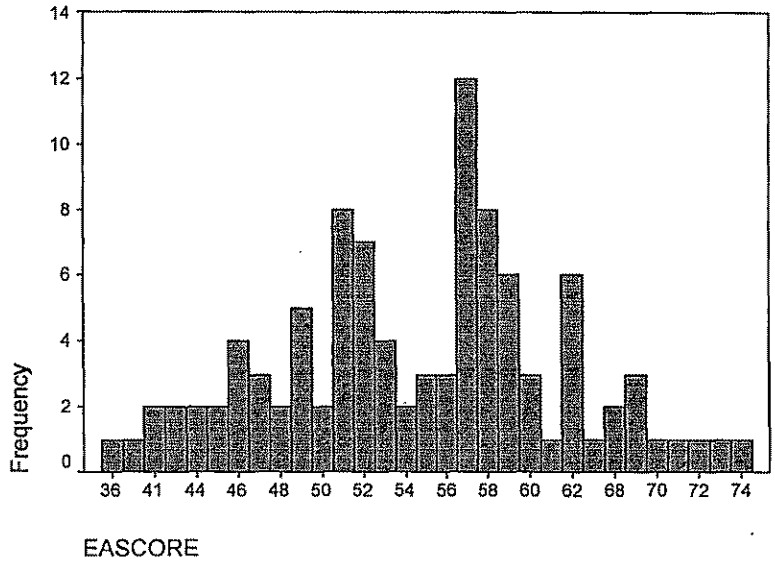

आकृति 4.2.1

पर्यावरण जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक एवं आवृत्तियों का स्तंभाकृति ग्राफ

तालिका 4.2.2

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापको की पर्यावरण जागरूकता स्तर

प्राप्तांक का विस्तार	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशत	ज्ञान स्तर
68-75	10	10%	बहुत अच्छा
53-67	50	50%	अच्छा
38-52	38	38%	औसतन
23-37	2	2%	कम

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 100 अध्यापकों में से 10 प्रतिशत अध्यापकों का पर्यावरण ज्ञान स्तर बहुत अच्छा (Very Good)

है। 50 प्रतिशत अध्यापकों का ज्ञान अच्छा (Good) है। 38 प्रतिशत अध्यापकों का पर्यावरण ज्ञान स्तर औसतन (Average) है। तथा 2 प्रतिशत अध्यापको का पर्यावरण ज्ञान स्तर बहुत कम है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि 60 प्रतिशत अध्यापक पर्यावरण के प्रति अच्छी तरह जागरूक है। तथा 40 प्रतिशत अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता औसतन है।

4.2.2 परिकल्पनाः– 1

ग्रामीण तथा शहरी अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' का परीक्षण का उपयोग किया गया। और इसका विवरण तालिका 4.2.3 में दर्शाया है।

तालिका 4.2.3

पर्यावरण जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक व क्षेत्र, के सार्थकता अंतर का विवरण –

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df.
पर्यावरण जागरूकता	ग्रामीण	50	52.76	5.438	2.837	98
	शहरी	50	57.02	9.119		

* 't' मूल्य 0.01 स्तर पर सार्थक है।

ग्रामीण तथा शहरी अध्यपकों की पर्यावरण जागरूकता परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 2.837, df 98 हैं। 't' प्राप्तांक 0.01 स्तर पर सार्थक है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक होने की वजह से शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण तथा शहरी अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है।

इसकी वजह यह हो सकती है कि शहरी अध्यापकों को पर्यावरण से संबंधित समस्याओं का सामना दैनंदिन जीवन में करना पड़ता है। इसलिए उनके पर्यावरण जागरूकता अधिक है।

यह निष्कर्ष ''पटेल और पटेल'' (1994) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.3 परिकल्पनाः– 2

अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.4 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.4

पर्यावरण जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक व लिंग (अध्यापक, अध्यापिका) के सार्थकता अंतर का विवरण

चर	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	't'	df.
पर्यावरण जागरूकता	स्त्री	50	56.16	8.758	1.648*	98
	पुरूष	50	53.62	6.480		

* 't' मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अध्यापक तथा अध्यापिकाओं के पर्यावरण जागरूकता परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 1.648, df98 है। 't' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि अध्यापक तथा अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

यह निष्कर्ष ''पटेल और पटेल'' (1994) अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.4 परिकल्पनाः– 3

विज्ञान तथा अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण करने हेतु 't' परीक्षण का उपयोग किया गया। इसका विवरण 4.2.5 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.2.5

पर्यावरण जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक व विषयिक पृष्ठभूमि [विज्ञान व अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त)] के सार्थकता अंतर का विवरण

चर	विषयिक पृष्ठभूमि	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	't'	df.
पर्यावरण जागरूकता	विज्ञान	26	60.42	8.315	4.463*	79
	अन्य (except s.s.)	55	53.15	6.057		

* 't' मूल्य 0.01 स्तर पर सार्थक है।

विज्ञान तथा अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता परीक्षण के 't' प्राप्तांक का मूल्य 4.463, df 79 है। 't' प्राप्तांक 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक होने की वजह से शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान तथा अन्य (सामाजिक विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है। इसकी वजह यह हो सकती है कि पर्यावरण शिक्षा विज्ञान की ही एक शाखा है। इसीलिए विज्ञान पृष्ठभूमि वाले अध्यापक पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक है।

यह निष्कर्ष प्रधान (2002) के अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

4.2.5 परिकल्पनाः– 4

सामाजिक विज्ञान तथा गैर सामाजिक विज्ञान (विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'टी' परीक्षण का उपयोग किया है। इसका विवरण तालिका 4.2.6 में दर्शाया है।

तालिका 4.2.6

पर्यावरण जागरूकता परीक्षण के प्राप्तांक व विषयिक पृष्ठभूमि सामाजिक विज्ञान व अन्य (विज्ञान के अतिरिक्त), के सार्थकता अंतर का विवरण

चर	विषय	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	't'	df.
पर्यावरण जागरूकता	सामाजिक विज्ञान	19	52.37	8.112	0.440*	72
	अन्य (except science)	55	53.15	6.057		

* 't' मूल्य 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है।

सामाजिक विज्ञान तथा अन्य (विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता परीक्षण 't' प्राप्तांक का मूल्य 0.440 df 72 है। 't' प्राप्तांक 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 't' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाती है। अतः यह स्पष्ट होता है सामाजिक विज्ञान तथा अन्य(विज्ञान विज्ञान के अतिरिक्त) विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

यह निष्कर्ष प्रधान (2002) के अध्ययन के निष्कर्ष के समान है।

4.2.6 परिकल्पनाः– 5

विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'F' परीक्षण (Anova) का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.7 में दर्शाया है।

तालिका 4.2.7

प्रसरण विश्लेषण (Anova) का सारांशः– पर्यावरण जागरूकता एवं विषयिक पृष्ठभूमि (विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व अन्य)

Source of variance	Sum of square	df	mean square	'F'
Between Group	1084.186	2	542.093	10.745*
Within Group	4893.604	97	50.450	
Total	5977.790	99		

* 'F' मूल्य 0.01 स्तर पर सार्थक है।

विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता परीक्षण 'F' प्राप्तांक का मूल्य 10.745 है। 'F' प्राप्तांक 0.01 स्तर पर सार्थक है।

प्राप्त 'F' मूल्य सार्थक होने की वजह से शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अतः यह स्पष्ट होता है की विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जगरूकता में सार्थक अंतर है।

यह निष्कर्ष प्रधान (2002) के अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश्य है।

तालिका 4.2.8

पर्यावरण जागरूकता एवं विषयिक पृष्ठभूमि के मध्यमानों के अंतर का सारांश

विषय (1)	विषय (2)	मध्यमान अंतर	प्रामाणिक त्रुटि	सार्थकता स्तर
विज्ञान (60.42)	सा. विाज्ञन (52.37)	8.05*	2.144	0.000
	अन्य (53.15)	7.28 *	1.690	0.000
सा.विज्ञान (52.37)	अन्य (53.15)	0.78	1.890	0.682

* मध्यमान अंतर का मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है।

उपरोक्त तालिका परिकल्पना-5 को समर्थन देते हुए यह दर्शाती है कि विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापको के मध्यमानों के अंतर का मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। इसलिए यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान व सामाजिक विज्ञान विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों में सार्थक अंतर है। विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की मध्यमानों के अंतर का मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। इसीलिए विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है। जबकि सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों के मध्यमानों के अंतर का मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसीलिए सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयिक पृष्ठभूमि वाले अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4.2.7 परिकल्पनाः– 6

0–10 वर्ष, 10–20 वर्ष तथा 20 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना का परीक्षण करने हेतु 'F' परीक्षणा (Anova) का उपयोग किया गया। इसका विवरण तालिका 4.2.9 में दर्शाया है।

तालिका 4.2.9

प्रसरण विश्लेषण का सारांशः– पर्यावरण जागरूकता एवं अनुभव

(0–10 वर्ष, 10–20 वर्ष एवं 20 वर्ष से अधिक)

Source of variance	Sum of square	df	mean square	'F'
Between Group	249.2002	2	124.601	2.110*
Within Group	5728.588	97	59.058	
Total	5977.790	99		

* 'F' का मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

0–10, 10–20 व 20 से अधिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता परीक्षण 'F' प्राप्तांक का मूल्य 2.110 है। 'F' प्राप्तांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

प्राप्त 'F' मूल्य सार्थक नहीं होने की वजह से शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि 0–10, 10–20 तथा

20 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव प्राप्त अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4.2.8 उद्देश्य–9

प्राथमिक विद्यालयों में होने वाले पर्यावरण संबंधित कार्यक्रमों का अध्ययन।

प्रधानाध्यापक साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी का विवरण निम्नलिखित तालिकाओं में दर्शायी गयी है।

तालिका 4.2.10

विद्यालयों में होने वाली पर्यावरण संबंधित गतिविधियों तथा विद्यालयों का प्रतिशत निम्न तालिका में है।

क्र.	गतिविधियाँ	ग्रामीण		शहरी	
		No. of School	%	No. of School	%
1.	पर्यावरण दिवस	10	100%	10	100%
2.	वन्य प्राणी सप्ताह	0	0%	0	0%
3.	वृक्षारोपण कार्यक्रम तथा कार्यक्रम में स्थानीय समुदाय व अभिभावकों का सहभाग	9	90%	8	80%
4.	पर्यावरण शिक्षा में दृश्य–श्रव्य साधनों का उपयोग	10	100%	6	60%
5.	खेल द्वारा पर्यावरण संबंधित ज्ञान	8	80%	5	50%
6.	पर्यावरण संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन व प्रदर्शनी में स्थानीय समुदाय व अभिभावकों का सहभाग।	5	50%	3	30%

7.	स्थानीय कारखानों की भेंट	9	90%	5	50%
8.	स्वच्छता दिवस	10	100%	10	100%
9.	कार्यशाला का आयोजन	0	0%	0	0%
10.	शिक्षक–प्रशिक्षक का आयोजन	0	0%	0	0%
11.	प्रतियोगिता				
	(अ) निबंधलेखन	9	90%	10	100%
	(ब) वाद–विवाद	2	20%	0	0%
	(स) कहानी लेखन	6	60%	5	50%
	(द) नाटिका	3	30%	2	20%

उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि वर्धा जिले के 20 विद्यालयों से (10 ग्रामीण व 10 शहरी) सभी विद्यालयों में (100%) पर्यावरण दिवस मनाया जाना है। वन्य प्राणी सप्ताह का आयोजन एक भी विद्यालय में नहीं किया जाता इसलिए इसका प्रतिशत शून्य (0) है। 90% ग्रामीण विद्यालयों में व 80% शहरी विद्यालयों में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन व कार्यक्रम में स्थानीय समुदाय तथा अभिभावकों का सहभाग होता है। ग्रामीण क्षेत्र के सभी 100% विद्यालयों में एवं शहरी क्षेत्र के 60% विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा दृश्य–श्रव्य साधनों द्वारा दी जाती है। खेल द्वारा पर्यावरण संबंधित ज्ञान ग्रामीण क्षेत्र के 80% व शहरी क्षेत्र के 50% विद्यालयों में दिया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र के 50% विद्यालयों में तथा शहरी क्षेत्र 30% विद्यालयों में पर्यावरण ज्ञान संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है एवं प्रदर्शनी में अभिभावक व स्थानीय समुदाय का सहभाग होता है। स्थानीय कारखानों की Visit 90% ग्रामीण विद्यालयों से तथा 50% शहरी विद्यालयोंसे की जाती है। ग्रामीण एवं

शहरी क्षेत्र के सभी विद्यालयों (100%) में स्वच्छता दिवस मनाते हैं। पर्यावरण संबंधित कार्यशाला व शिक्षक–प्रशिक्षण का आयोजन एक भी (0%) विद्यालय में नहीं किया जाता।

विद्यालयों में पर्यावरण संबंधित ज्ञान बढ़ाने हेतु विविध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। उनका प्रतिशत इस प्रकार है। निबंध लेखन ग्रामीण क्षेत्र के 90% तथा शहरी क्षेत्र के 100% विद्यालयों में आयोजित की जाती है। वाद–विवाद प्रतियोगिता ग्रामीण क्षेत्र के 20% एवं शहरी क्षेत्र के 0% विद्यालयों में, कहानी लेखन का आयोजन ग्रामीण क्षे के 60% एवं शहरी क्षेत्र के 50% विद्यालयों में किया जाता है। नाटिका का आयोजन 30% ग्रामीण विद्यालयों में व 20% शहरी विद्यालयों में किया जाना है।

उपरोक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के सभी विद्यालयों में पर्यावरण दिवस मनाते हैं। वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन करते हैं एवं उसमें स्थानीय समुदाय व अभिभावकों का सहभाग भी होता है।

ग्रामीण क्षेत्र के सभी विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा में दृश्य–श्रव्य साधनों का उपयोग किया जाता है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के सभी विद्यालयों में सप्ताह में एक दिवस स्वच्छता दिवस के रूप में मनाते हैं। निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन सभी विद्यालयों में किया जाता है।

परन्तु, वन्य प्राणी सप्ताह, पर्यावरण संबंधित कार्यशाला तथा शिक्षक–प्रशिक्षण का आयोजन एक भी विद्यालय में नहीं किया जाता है।

तालिका 4.2.11

पर्यावरण संबंधित गतिविधियाँ एवं प्रतिशत का विवरण

क्र.	गतिविधियाँ	ग्रामीण		शहरी	
		No. of School	%	No. of School	%
12.	शैक्षिक भ्रमण के लिये दिए गए अवसर				
	– 1	9	90%	10	100%
	– 2	1	10%	0	0%
13.	वर्ष में पर्यावरण संबंधित प्रभातफेरी का आयोजन				
	– 1	8	80%	10	100%
	– 2	2	20%	0	0%

उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि ग्रामीण क्षेत्र 90% विद्यालयों तथा शहरी क्षेत्र के 100% (सभी) विद्यालयों में शैक्षिक भ्रमण के लिए वर्ष में एक बार अवसर दिया जाता है। और ग्रामीण क्षेत्र 10% (एक विद्यालय) विद्यालय में वर्ष में दो बार शैक्षिक भ्रमण का अवसर दिया जाता है। वर्ष में पर्यावरण संबंधित प्रभातफेरी का आयोजन ग्रामीण क्षेत्र के 80% तथा शहरी क्षेत्र के 100% (सभी) विद्यालयों में एक बाद किया जाता है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 20% विद्यालयों में प्रभातफेरी का आयोजन वर्ष में दो बार किया जाता है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र तथा शहरी क्षेत्र के लगभग सभी विद्यालयों में वर्ष एक बार शैक्षिक भ्रमण का अवसर दिया जाता है। एवं पर्यावरण संबंधित प्रभातफेरी का आयोजन किया जाता है।

तालिका 4.2.12

पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्रों द्वारा किए गए Project's का विषय

क्र.	गतिविधियाँ	ग्रामीण		शहरी	
		No. of School	%	No. of School	%
14.	पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्रों द्वारा किये गए Project's				
	– पत्तीयों का संग्रह	10	100%	10	100%
	– फूलों का संग्रह	10	100%	10	100%
	– बिजों का संग्रह	8	80%	10	100%
	– औषधी वनस्पती संग्रह	3	30%	2	20%
	– पक्षीयों के पंखों का संग्रह	5	50%	1	10%

उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि पाठ्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण से संबंधित विविध Project छात्रों द्वारा किये जाते जिसमें ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के सभी विद्यालयों में पत्तियों व फूलों का संग्रह यह Project दिया जाता है। बिजो का संग्रह ग्रामीण के 80% व शहरी के 100% (सभी विद्यालय) विद्यालयों में दिया जाता है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के 30% व 20% विद्यालयों में औषधी वनस्पती संग्रह यह Project दिया जाता है। एवं पक्षीयों के पंखो का संग्रह ग्रामीण क्षेत्र 50% व शहरी क्षेत्र के 10% विद्यालयों में दिया जाता है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण से संबंधित Project जैसे पत्तीयों का संग्रह, फूलों का संग्रह, औषधी वनस्पती संग्रह, लगभग सभी विद्यालयों में (ग्रामीण व शहरी) दिये जाते हैं।

तालिका 4.2.13

पर्यावरण से संबंधित अन्य गतिविधियों का विवरण

क्र.	गतिविधियाँ	ग्रामीण		शहरी	
		No. of School	%	No. of School	%
	पर्यावरण से संबंधित अन्य गतिविधियाँ				
	- संपूर्ण ग्राम स्वच्छता अन्य ग्रतिविधियाँ	8	80%	0	0%
	- Vermicompost निर्मिती	7	70%	7	10%
	- Kitchen garden	10	100%	0	0%

उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि 'संपूर्ण ग्राम स्वच्छता अभियान' में ग्रामीण क्षेत्र 80% विद्यालय सहभागी होते हैं जबकि शहरी क्षेत्र का एक भी विद्यालय (0%) सहभागी नहीं होता। Vermicompost का निर्माण ग्रामीण क्षेत्र 70% विद्यालयों व शहरी क्षेत्र 10% विद्यालयों में किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र के सभी विद्यालयों में Kitchen garden है। जबकि शहरी क्षेत्र के एक भी विद्यालय में नहीं है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में पर्यावरण से संबंधित अधिक गतिविधियाँ होती है।